Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor:3.021 website: www.researchguru.net
Volume-12, Issue-1, June-2018

उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक दबाव का अध्ययन

डॉ. सन्तोष चौधरी

प्राचार्या श्रीमती अनार देवी शिक्षक प्रशिक्षण महाविधालय कोटपुतली जयपुर

drsantosh1964@gmail.com

Abstract:प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक दबाव का अध्ययन किया गया। न्याद"र्ा हेतु राजस्थान राज्य के शैक्षिक दृष्टि से निर्मित जयपुर संभाग के सात जिलों जयपुर ,सीकर, झुन्झनु, दौसा, अलवर, धौलपुर और भरतपुर के उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया। विद्यार्थियों के शैक्षिक दबाव के मापन हेतु डॉ. आभा रानी बिष्ट द्वारा निर्मित शैक्षिक दबाव मापनी की प्र"नावली का प्रयोग किया गया।प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान प्रमाप विचलन क्रांतिक अनुपात एवं प्रति"ात की सार्थकता का प्रयोग किया गया।परिणाम दर्शाते हैं कि उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक दबाव में सार्थक अन्तर नही पाया जाता है।

प्रस्तावना - एक शिक्षक का कार्य केवल विद्यार्थियों को शिक्षित करना ही नही बल्कि उनका सही मार्गदर्शन करना भी है।क्योंकि विद्यालयीय शिक्षा पूरी करने के बाद विद्यार्थी सबसे ज्यादा मानसिक तनाव में रहता है क्योंकि यह समय उनके भविष्य के निर्माण का होता है। इसलिये वे तनावग्रस्त रहतें है। इस बदलाव व तनाव की स्थिति का कारण अकादमिक या शैक्षिक दबाव है। विद्यार्थियों पर यह दबाव कभी माता–पिता का होता है तो कभी शिक्षक का होता है। अभिभावक अपने बच्चों से ज्यादा से ज्यादा अपेक्षायें रखते हैं जिससे उन पर अकादमिक दबाव बढ जाता है। इस दबाव को कम करने का प्रमुख घटक शिक्षक एवं विद्यालय है। शिक्षक उनके प्रति अपना उत्तरदायित्व समझता है और अपने शिक्षण कौशल द्वारा उनका मार्गदर्शन करता है। जिससे उनके अकादमिक दबाव को कुछ हद तक कम किया जा सकता है।

समस्या कथन – " उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक दबाव का अध्ययन "

शोधकार्य का उद्देश्य 1 - उच्च माध्यमिक माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर से सम्बद्ध–राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक दबाव का अध्ययन करना।

2 - उच्च माध्यमिक केन्द्रिय शिक्षा बोर्ड दिल्ली से सम्बद्ध– राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक दबाव का अध्ययन करना।

3 - उच्च माध्यमिक माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर एवं केन्द्रिय शिक्षा बोर्ड दिल्ली से सम्बद्ध– राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक दबाव की तुलना करना।

4- उच्च माध्यमिक माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर एवं केन्द्रिय शिक्षा बोर्ड दिल्ली से सम्बद्ध–गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक दबाव की तुलना करना।

अध्ययन की परिकल्पना -

1 **-** उच्च माध्यमिक – माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर से सम्बद्ध– राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का शैक्षिक दबाव सामान्य है।

2 **-** उच्च माध्यमिक– केन्द्रिय शिक्षा बोर्ड दिल्ली से सम्बद्ध– राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का शैक्षिक दबाव सामान्य है।

3 **-** उच्च माध्यमिक –माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर एवं केन्द्रिय शिक्षा बोर्ड दिल्ली से सम्बद्ध–राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक दबाव में सार्थक अन्तर नही है।

4 - उच्च माध्यमिक –माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर एवं केन्द्रिय शिक्षा बोर्ड दिल्ली से सम्बद्ध– गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक दबाव में सार्थक अन्तर नही है।

5 - उच्च माध्यमिक – माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर से सम्बद्ध– राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक दबाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

6 - केन्द्रिय शिक्षा बोर्ड दिल्ली से सम्बद्ध– राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक दबाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

संकियात्मक शब्दों का परिभाषीकरण .

1-**विद्यार्थियों का शैक्षिक दबाव –** दबाव का सम्बन्ध मानसिक तनाव से है जो परिस्थितियॉ हमारी सामान्य जीवनधारा को अस्त–व्यस्त कर देती हैं उसे तनाव उत्पन्न करने वाली परिस्थिति कहते हैं। अतः अकादमिक दबाव या शैक्षिक दबाव शैक्षिक वातावरण के फलस्वरुप विद्यार्थियों में उत्पन्न होने वाला दबाव है। वलभ्भ डोगरे के अनुसार –बच्चों के अन्दर पनपती कुन्ठा या तीव्र आकांक्षा को यदि सकारात्मक दि"ाा दे दी जाये तो उनकी उर्जा को विघ्वं"ा से सृजन की ओर मोडा जा सकता है।

2.**राजकीय विद्यालय**– ऐसे विद्यालय जिनका संचालन एवं देखरेख की सम्पूर्ण जिम्मेदारी राज्य सरकार की होती है।

3 .गैर राजकीय विद्यालय - ऐसे विद्यालय जिनका संचालन एवं देखरेख की सम्पूर्ण जिम्मेदारी राज्य सरकार की न होकर एक निजि संस्था या समिति की होती है।

4. **माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर -** ऐसे विद्यालय जो राजस्थान राज्य f"ाक्षा बोर्ड अजमेर से सम्बद्ध होते हैं।

5. **केन्द्रिय शिक्षा बोर्ड दिल्ली -** ऐसे विद्यालय जो केन्द्रिय शिक्षा बोर्ड दिल्ली से सम्बद्ध होते हैं।

शोधविधि - प्रस्तुत "ाोध कार्य में सर्वेक्षण एवं वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया हैं।

शाध का परिसीमन - प्रत्येक शोधकर्त्री के पास समय एवं साधनों का अभाव होता है जिससे वह अपनी परिसीमाओं के अन्तर्गत ही "ाोध सम्बन्धित कार्यों को सम्पादित करती है जिसे समस्या का परिसीमन कहते हैं। शोधकर्त्री के पास भी समय एवं साधनों की कुछ परिसीमायें रही हैं जिसके अन्तर्गत प्रस्तुत "ाोध अध्ययन पूर्ण किया गया है। अनुसंधानकर्त्री ने निम्नलिखित सीमाओं को दृष्टि में रखकर इस "ाोध अध्ययन को सम्पन्न किया है।

1 - प्रस्तुत "ाोध अध्ययन में राजस्थान राज्य के शैक्षिक दृष्टि से निर्मित जयपुर संभाग के सात जिलों को लिया गया है। जयपुर ,सीकर, झुन्झनु, दौसा, अलवर, धौलपुर और भरतपुर

2 -इस "ाोध कार्य में 1400 विद्यार्थियों को जिनमें से 700 विद्यार्थी माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर से सम्बद्ध तथा 700 विद्यार्थी केन्द्रिय शिक्षा बोर्ड दिल्ली से सम्बद्ध को लिया गया है।

3 - सर्वेक्षण के अन्तर्गत जयपुर सभांग के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर से सम्बद्ध 7 राजकीय विद्यालय एवं 7 गैर राजकीय विद्यालय तथा केन्द्रिय शिक्षा बोर्ड दिल्ली से सम्बद्ध 7 राजकीय विद्यालय एवं 7 गैर राजकीय विद्यालयों को चयनित किया गया है।

4 - न्याद"ार्श हेतु राजस्थान राज्य के 1400 बालक बालिकाओं का चयन किया गया जो कक्षा 11एवं 12 में अध्ययनरत हैं।

5 - इस "ाोध कार्य में विद्यालय में पढने वाले सभी जाति वर्ग के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

6 - "ाोध कार्य में सम्मिलित परीक्षण सूची अकादमिक दबाव हेतु उच्च माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है।

शोध कार्य में प्रयुक्त मापनी - इस "ाोध कार्य में डॉ. आभा रानी बिष्ट द्वारा निर्मित शैक्षिक दबाव मापनी की प्र"नावली का प्रयोग किया गया। इसका अंकन 80 प्रश्नों के आधार पर किया गया है। इसमें चार विभायें हैं जो निराशा , संघर्ष ,दबाव एवं चिंता से सम्बन्धित विभा है। प्रत्येक प्रश्न में सकारात्मक एवं नकारात्मक विकल्प दिये गये हैं। प्रत्येक विकल्प के अलग–अलग नम्बर दिये गये हैं। जो सारणी द्वारा प्रदर्शित है।

क्रम संख्या	प्रश्न	सकारात्मक	प्रश्न	नकारात्मक
1	सदैव	4	अत्यधिक	0
2	बहुधा	3	अधिक	1
3	कभी –कभी	2	सामान्य	2
4	बहुत कम	1	कम	3
5	कभी नही	0	बिल्कुल कम	4

फलांकन - फलांकन हेतु मापनी के प्रत्येक आयाम के अंकों का अलग–अलग योग किया गया फिर सम्पूर्ण अंकों का योग करके सारणी के आधार पर छात्र एवं छात्राओं को ध्यान में रखते हुये परिणाम निश्चित किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियां - प्रस्तुत "ाोध अध्ययन में संख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान प्रमाप विचलन कांतिक अनुपात एवं प्रति"ात की सार्थकता का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों की व्याख्या एवं विश्लेषण - "ाोधकर्त्री ने न्याद"ार्श में सम्मिलित माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर एवं केन्द्रिय शिक्षा बोर्ड दिल्ली से सम्बद्ध उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक दबाव मापनी का अध्ययन करने हेतु विद्यार्थियों के छात्र एवं छात्राओं के समूहों पर प्रसारित मापनियों के प्राप्तांकों के आधार पर प्रदत्तों की व्याख्या एवं विश्लेषण कार्य किया है।

परिकल्पना .1- माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर से सम्बद्ध राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक दबाव में सार्थक अन्तर नही पाया जाता है।

सारणी संख्या -1

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर से सम्बद्ध - राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के समस्त विद्यार्थियों के शैक्षिक दबाव स्तर मापनी के प्राप्तांकों का प्रतिशत एवं प्रतिशत सार्थकता

विद्यार्थी	प्रतिशत	प्रतिशत सार्थकता मान	निष्कर्ष
उच्च	25.29	4.23	21.06 से 29.52 तक
औसत	52.29	4.87	47.42 से 57.18 तक
निम्न	22.42	4.05	18.37 से 26.47 तक

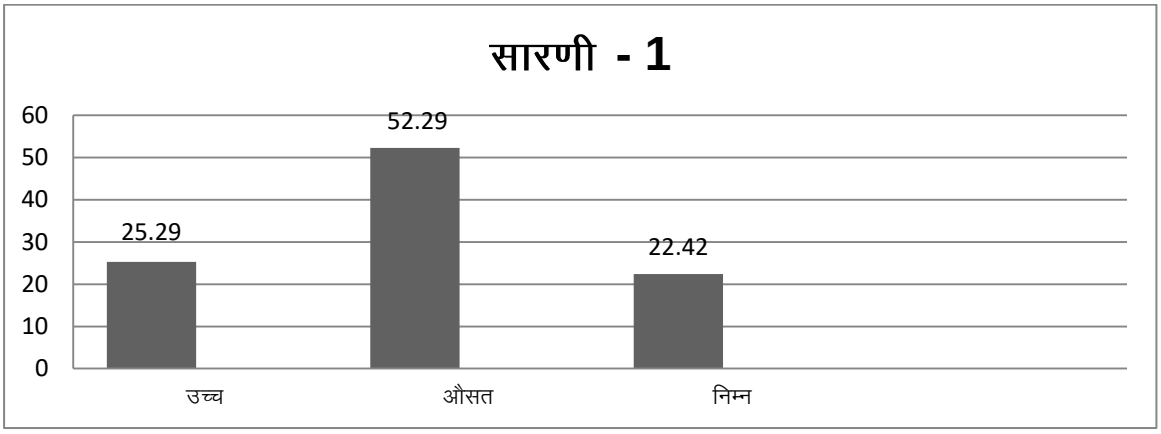

उपरोक्त सारणी संख्या– 1 में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर से सम्बद्ध– राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के समस्त विद्यार्थियों के शैक्षिक दबाव स्तर मापनी के प्राप्तांकों के अनुसार उच्च आकांक्षा स्तर में 25.29 प्रतिशत विद्यार्थी हैं। प्रतिशत सार्थकता मान के अनुसार कुल 700 विद्यार्थियों में से 21.06 प्रतिशत कम से कम व 29.52 प्रतिशत अधिक से अधिक, औसत आकांक्षा स्तर में 52.29 प्रतिशत विद्यार्थी हैं, जिसमें कम से कम 47. 42 प्रतिशत व 57.18 प्रतिशत अधिक से अधिक तथा निम्न आकांक्षा स्तर में 22.42 प्रतिशत विद्यार्थी हैं जिसमें कम से कम 18.37 प्रतिशत व 26.47 प्रतिशत अधिक से अधिक विद्यार्थियों का शैक्षिक दबाव स्तर है।

सारणी संख्या -2

केन्द्रिय शिक्षा बोर्ड दिल्ली से सम्बद्ध - राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के समस्त विद्यार्थियों के शैक्षिक दबाव मापनी के प्राप्तांकों का प्रतिशत एवं प्रतिशत सार्थकता

विद्यार्थी	प्रतिशत	प्रतिश्त सार्थकता मान	निष्कर्ष
उच्च	38.29	9.52	28.77 से 47.81 तक
औसत	50.29	9.75	40.54 से 60.04 तक
निम्न	11.42	6.12	5.03 से 17.54 तक

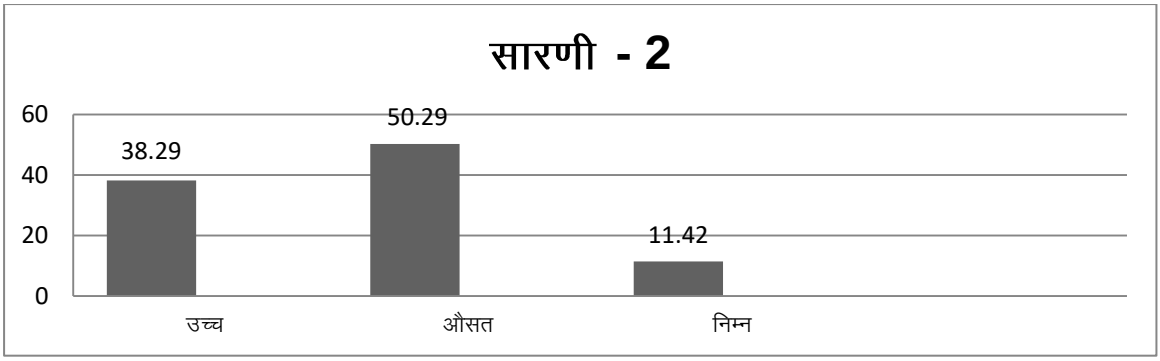

उपरोक्त सारणी संख्या .2 में केन्द्रिय शिक्षा बोर्ड दिल्ली से सम्बद्ध– राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के समस्त विद्यार्थियों के शैक्षिक दबाव मापनी के प्राप्तांकों के अनुसार उच्च शैक्षिक दबाव स्तर में 38.29 प्रतिशत विद्यार्थी हैं। प्रतिशत सार्थकता मान के अनुसार कुल 700 विद्यार्थियों में से 28.77 प्रतिशत कम से कम व 47.81 प्रतिशत अधिक से अधिक, औसत शैक्षिक दबाव स्तर में 50.29 प्रतिशत विद्यार्थी हैं, जिसमें कम से कम 40.54 प्रतिशत व 60.04 प्रतिशत अधिक से अधिक तथा निम्न शैक्षिक दबाव स्तर में 11.42 प्रतिशत विद्यार्थी हैं जिसमें कम से कम 5.03 प्रतिशत व 17.54 प्रतिशत अधिक से अधिक विद्यार्थियों का शैक्षिक दबाव स्तर है।

शोध निष्कर्ष एवं सुझाव **-**किसी भी अध्ययन में निष्कर्ष महत्वपूर्ण सोपान होता है। निष्कर्ष ही अध्ययन का मूल सार है। ”ाोधकर्त्री ने विद्यालय के विद्यार्थियों के शैक्षिक दबाव स्तर का अध्ययन किया है। ”ाोधकर्त्री ने विद्यार्थियों के निम्नांकित समूहों के आधार पर व्याख्या करके निष्कर्ष प्राप्त किये हैं।

परिकल्पना नं **-** 1 उपरोक्त सारणी संख्या 1 के अनुसार माध्यमिक अजमेर से सम्बद्ध– राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का शैक्षिक दबाव स्तर सामान्य है।

निष्कर्ष **-** अतः स्पष्ट है कि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर से सम्बद्ध– राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का शैक्षिक दबाव स्तर उच्च स्तर का है। अतः हमारी परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना नं **-2** उपरोक्त सारणी संख्या 2 के अनुसार केन्द्रिय शिक्षा बोर्ड दिल्ली से सम्बद्ध– राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का शैक्षिक दबाव स्तर सामान्य है।

निष्कर्ष **-** अतः स्पष्ट है कि केन्द्रिय शिक्षा बोर्ड दिल्ली से सम्बद्ध– राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर उच्च स्तर का है। अतः हमारी परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

सम्पूर्ण निष्कर्ष **-** किसी भी अध्ययन में निष्कर्ष महत्वपूर्ण सोपान होता है। निष्कर्ष ही अध्ययन का मूल सार है। ”ाोधकर्त्री ने विद्यालय के विद्यार्थियों के शैक्षिक दबाव स्तर का अध्ययन किया है। सम्पूर्ण निष्कर्ष का सार यह है कि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर एवं केन्द्रिय शिक्षा बोर्ड दिल्ली से सम्बद्व राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों का शैक्षिक दबाव स्तर उच्च स्तर का है। लेकिन सामान्य रुप से आम जनता की यह धारणा होती है कि केन्द्रिय विद्यालय के विद्यार्थियों पर शैक्षिक दबाव कम होता है। लेकिन अध्ययन में यह पाया गया कि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर एवं केन्द्रिय शिक्षा बोर्ड दिल्ली से सम्बद्व राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों का शैक्षिक दबाव सामान्य है। उनमें कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

शैक्षिक निहितार्थ -

1. **शिक्षकों की दृष्टि से -** प्रत्येक विद्यार्थी का शैक्षिक स्तर अलग–अलग होता है वह अपनी सामर्थ्य के अनुसार उसे पुरा करने का प्रयास करता है। जब विद्यार्थी विद्यालय में शिक्षा ग्रहण कर रहा होता है तो उस समय उसकी आकांक्षा तीव्र होती है जिसे वह प्राप्त करना चाहता है यदि वह उसे प्राप्त कर लेता है तो उसकी सोच सकारात्मक होती है यदि प्राप्त नहीं कर पाता है तो वह कुन्ठित व तनावग्रस्त हो जाता है। ऐसी स्थिति में शिक्षक एवं अभिभावक को बालक की

समस्या को सुनना एवं समझना चाहिये। प्रस्तुत "ाोध के अन्तर्गत अभिभावक एवं शिक्षकों का यह दायित्व बनता है कि वे बालक की आकांक्षा का दमन न करके उसे उचित मार्गदर्शन दें। तभी शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक सुधार होगा और बालकों पर बढते शैक्षिक दबाव को कम किया जा सकता है।

2. **अभिभावकों की दृष्टि** - प्रस्तुत "ाोध कार्य अभिभावकों की दृष्टि से भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अभिभावक अपने बालकों के लिये अच्छा विद्यालय एवं अच्छा शिक्षक चाहते हैं। प्रस्तुत "ाोध के अन्तर्गत अभिभावक एवं शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी की शैक्षिक दबाव स्तर सम्बन्धी समस्याओं के निदान में अपना सहयोग प्रदान करके उनको जीवन में सफलता प्राप्त करने के सही मार्गदर्शन दे सकेंगे ।
3. **विद्यालय प्रशासन की दृष्टि से** - प्रस्तुत "ाोध के अध्ययन से विद्यालय प्रशासन भी विद्यालय के विद्यार्थियों के शैक्षिक दबाव स्तर को कम करने के लिये शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की विभिन्न समस्याओं का अध्ययन करके उसके निस्तारण करने में सहयोग करेंगें।
4. **समाज की दृष्टि से** - प्रस्तुत "ाोध कार्य समाज की दृष्टि से भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अधिकतर किशोर और वयस्क अपनी शैक्षिक दबाव स्तर के सन्दर्भ में अल्पभाषी होते हैं। वे व्यक्तिगत रुप से अपने आपको दूसरों के सामने प्रदर्शित नहीं कर पाते हैं। ये अनुभव द्वारा ही सीखते हैं। अतः समाज का यह उत्तरदायित्व बनता है कि वे विद्यार्थियों के शैक्षिक दबाव स्तर को कम करने के लिये उनका सहयोग करें। जिससे बालक समाज के योग्य नागरिक बन सकेंगे।

आगामी शोध हेतु सुझाव –प्रस्तुत अध्ययन की सीमाएं सीमित हैं और विभिन्न चरों द्वारा इसका अध्ययन किया गया है इसी प्रकार का अध्ययन विस्तृत परिक्षेत्र तथा अधिक न्याद"ा चर में किया जा सकता है।इस दृष्टि से निम्नलिखित सुझाव अपेक्षित हैं –

1. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर से सम्बद्व राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों का शैक्षिक दबाव स्तर उच्च स्तर का है उसे निम्न स्तर का बनाने के लिये शोधकार्य किया जा सकता है।
2. केन्द्रिय शिक्षा बोर्ड दिल्ली से सम्बद्व राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों का शैक्षिक दबाव स्तर उच्च स्तर का है उसे निम्न स्तर का बनाने के लिये शोधकार्य किया जा सकता है।
3. ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों को शोधकार्य के लिये चुना जा सकता है।
4. राजस्थान के विभिन्न संभागों के विद्यालयों के विद्यार्थियों शैक्षिक दबाव स्तर पर शोधकार्य किया जा सकता है।
5. विद्यार्थियों की विभिन्न शैक्षिणिक समस्याओं पर शोधकार्य किया जा सकता है।
6. प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के बालकों पर शोधकार्य किया जा सकता है।
7. विभिन्न प्रकार के विद्यालयों जैसे नवोदय विद्यालय एवं मुस्लिम विद्यालय के विद्यार्थियों पर शोधकार्य किया जा सकता है।

References

1. शर्मा आर.सी.– 1970 विद्यालय संगठन नई दिल्ली ।
2. मलैया के.सी. –1971 शैक्षिक प्रशासन एवं पर्यवेक्षण म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल।
3. भटनागर सुरेश– 1996 शैक्षिक प्रबन्ध एवं शिक्षा की समस्यायें सूर्या पब्लिकेशन मेरठ।
4. व्यास हरिश्चन्द्र –1996 शैक्षिक प्रबन्ध एवं शिक्षा की समस्यायें आर्य बुक डिपो दिल्ली।
5. भार्गव ऊषा– 1987 किशोर मनोविज्ञान राज. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर।
6. सुखिया एस.पी.–1979 शैक्षिक अनुसन्धान के मूलतत्व विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
7. बुच एम.बी.– 1972.. 1978 शैक्षिक अनुसन्धान का द्वितीय सर्वे।
8. भन्डारी डी.आर.–1991 अनुसन्धान पद्वति की विवेचना राज. ग्रन्थागार जोधपुर।
9. को एन्ड को –1979 शिक्षा मनोविज्ञान यूरोपिया पब्लिशिंग हाउस दिल्ली ।
10. आलेख – नबंर वन बनने की चूहा दौड में पीसते बच्चे दैनिक भास्कर जयपुर संस्करण 24 जून 2005
11. आलेख – "बेतुकी अपेक्षाओं से दबता बच्चों का व्यक्तित्व"दैनिक भास्कर जयपुर संस्करण 1 जुलाई 2005
12. आलेख – ओह फिर इम्तेहान दैनिक भास्कर जयपुर संस्करण 15 फरवरी 2006
13. आलेख – एग्जामस नो टेंशन नो प्रेशर दैनिक भास्कर जयपुर संस्करण 30 अप्रैल 2006
14. आलेख – परीक्षा ने प्राण लिये दैनिक भास्कर जयपुर संस्करण 11 जून 2006
15. आलेख – फंदे से झूला फेल छात्र दैनिक भास्कर जयपुर संस्करण 17 जून 2006